अमृतवेला बाबा के संग

आज सुबह बाबा से रुहरिहान करते बाबा ने एक चिन्तन मन को दिया कि.....

सोचो, भगवान ने हमको कितना प्यारा परिवार दिया है। हम किसके बच्चे हैं, भगवान के! और भगवान ने ब्रह्मा सरीखी माँ दी, फिर ईश्वरीय परिवार का हिस्सा होने का हक दिया। फिर भी इतना ध्यान रखा कि मेरे बच्चे को रत्ती भर भी दुख ना हो तो उसके लिये सर्व सम्बन्ध खुद एक से ही निभाने की युक्ति बताई। भाई-भाई में भी कभी-कभार छोटी सी बात पर कुछ दुख की फीलिंग आ सकती है, इसलिये खुद ही हर बच्चे को खुश रखने का बीड़ा उठाया और हम बच्चे फिर भी उससे सम्बन्धों का सुख लेने के बजाय दुनियादारी में ही उलझने लगते हैं। उस एक सुप्रीम से सर्व सुखों का रस लेते ही नहीं। उसको दिन रात हमारा ही ख्याल रहता है और हम उसके अलावा सबका ख्याल करते रहते..... ख्याल करो अगर अब इस सुख का रस नहीं लिया तो फिर कभी नहीं ले सकेंगे क्योंकि कल्प-कल्प यही पार्ट रिपीट होगा। ओ मेरे मोस्ट बिलव्ड बाबा, आपके सिवा किसी और से प्यार करना गोया अपने अतिन्द्रिय सुख को गंवाना। बाबा आप हैं तो ये परिवार है। आपसे ही तो ये सुख का संसार है बाबा। आप नहीं तो ये परिवार भी अविनाशी सुख की फीलिंग कैसे करा सकेगा। ओ मेरे मीठे बाबा, ओ मेरे प्यारे ते प्यारे बाबा, आप ही से सब सुख हैं बाबा। आप ही सत्य हो..... आप ही अविनाशी हो..... आप ही मेरे खुदा दोस्त हो..... आप ही तो प्रेम के वो सागर हो जिसमें मैं जितनी गहरी डुबकी लगाता हूँ उतना ही असीम आन्नद पाता हूँ बाबा। रोज सवेरे-सवेरे आप मुझे उठाते हो। अगर मैं दोबारा सो जाऊँ तो फिर से उठा देते हो। धीरे से कानों में आकर कहते हो, मेरे लाल, मेरे राज दुलारे बच्चे, उठो - देखो, आप अपने बाबा की गोद में हो। उठो मेरे आशाओं के चिराग, आँखें खोलो..... आओ हम मीठी-मीठी बातें करेंगे। इस समय मैं सिर्फ तुम्हारे ही पास हूँ। आप, और मैं ही हैं और कोई भी आस-पास नहीं है। मेरे नयनों के नूर बच्चे, जागो और मेरे गले लग जाओ। फिर जब मैं अपनी अधखुली सी पलकें ऊपर उठाता हूँ तो खुद को आपकी बाहों में समाये देखता हूँ। वो रुमानी पल..... वो अविस्मरणीय क्षण..... ..... आ**sss**हा हा!!! कितना गहरा, मीठा, निराला सुख है ये बाबा, आपकी बाहों में..... मैं खुद को कितना निश्चिंत पाता हूँ बाबा। ओ मेरे दिल के सहारे बाबा, मुझसे बातें करो बाबा। मुझे मीठी-मीठी बातें सुनाओ बाबा..... मुझे स्वर्गिक सुखों

का अनुभव अपनी गोद में कराओ बाबा..... मुझे अपनी बाहों के झूले में झुलाओ ना बाबा..... भले सतयुग में सब सुख होंगे मगर आपकी प्यार भरी बाहों के झूले में जो परमसुख है बाबा, वो सतयुगी मखमली बिस्तर में भी ना मिल सकेगा। कितनी गहन शान्ति है आपके स्पर्श में बाबा। कौन होगा मुझसे ज्यादा खुशनसीब इस जग में बाबा! जिसे हर दिन अमृतवेले स्वयं परमात्मा पिता शिव और जगत की सर्वश्रेष्ठ आत्मा ब्रह्मा माँ का सुख एक साथ मिलता हो। और वो भी पल दो पल के लिये नहीं बल्कि घण्टों इसी सुख के सागर में गोते लगाता रहूँ, इतना प्यार का सागर मेरे पास है। ये प्यार भरा सागर पूरा ही मेरा है। सुखों के सागर, आन्नद के सागर, प्रेम के सागर, पवित्रता के सागर, सर्व शक्तियों के सागर की सन्तान हूँ मैं। कैसा अलौकिक नशा है ये। कितना शुद्ध, कितना पवित्र नशा है ये। जो मेरी आखों में छलकते इस प्रेम के झरने को छलकने से नहीं रोक पा रहा। बह जाने दो बाबा इस छलकते झरने को.... और तैर लेने दो मुझे इस विशाल, असीम प्रेम के सागर में..... ओ मेरे मीठे बाबा! कितना ना प्यार करुँ मैं आपसे!!! जागते हुऐ भी कितनी गहरी सुख की नींद है ये... जिससे उठने का दिल ही नहीं होता।..... बैठ जायें कुछ देर आँखें मूँद कर अपने बाबा की बाहों में और अनुभव की गहराईयों में उतर जायें.... ये पल सिर्फ आपके हैं। बाबा का ये प्यार सिर्फ आपके लिये है.....

ओम शान्ति्